एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
हक
हक
मेरे
साहिब जी
नानक चिंता मत करहु - चिंता तिस ही हेइ । जल मह जंत उपाइअन
- तिना भि रोजी देइ । ओथै हट न चलई - ना को किरस करेइ ।
सउदा मूल न होवई - ना को लए न देइ । जीआ का आहार जीअ -
खाणा एहु करेइ । विच उपाए साइरा - तिना भि सार करेइ ।
www.9009.co.in

"चिंता + मणि"

(चिंता - चितंन - चिता)

1. नानक चिंता मत करहु - चिंता तिस ही हेइ । जल मह जंत उपाइअन - तिना भि रोजी देइ ।

अर्थः- गुरु नानक कहते हैं कि चिन्ता मत करो, क्योंकि परमात्मा स्वयं सबकी चिन्ता करता है । जल में उसने जितने जीव पैदा किए हैं, उन सबको भी वह भोजन देता है ।

ओथै हट न चलई - ना को किरस करेइ । सउदा मूल न होवई - ना को लए न देइ ।

अर्थः- वहाँ कोई दुकान नही चलती और न ही कोई खेती-बाड़ी करता है । कोई सौदेबाज़ी भी नहीं होती, कोई लेन-देन वहाँ नहीं है।

जीआ का आहार जीअ - खाणा एहु करेइ । विच उपाए साइरा - तिना भि सार करेइ । नानक चिंता मत करहु - चिंता तिस ही हेइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 955)

अर्थः- वहाँ कुछ जीवों का आहार अन्य जीवों को बना दिया जाता है । जो जीव समुद्रों में पैदा किए हैं, उनकी भी सार-खबर वह लेता है । इसलिए चिन्ता मत करो, क्योंकि परमात्मा सबकी चिन्ता करता है ।

ब. ना कर चिंत - चिंता है करते । हरि देवै जल थल - जंता सभते । अचिंत दान देइ प्रभ मेरा - विच पाथर कीट पखाणी हे । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1070)

अर्थः-ऐ जीव, तू कोई चिन्ता न कर, कर्ता (परमात्मा) को तेरी चिन्ता है । परमात्मा जल-थल में सब जगह जीवों का पोषण करता है । मेरा प्रभु स्वतः ही सबको देता है, पत्थर में बसनेवाले कीड़े को भी (देता है) ।

b. जननी केरे उदर उदक मह - पिंड कीआ दस दुआरा । देइ अहार अगन मह राखै - ऐसा खसम हमारा ।

अर्थः-(जिस प्रभु ने) माता के उदर-जल में दस द्वारों वाला यह शरीर रचा और उस अग्नि में हमें भोजन पहुँचाकर हमारी रक्षा की, वही हमारा स्वामी है ।

कुमी जल माह तन तिस - बाहर पंख खीर तिन नाही । पूरन परमानंद मनोहर - समझ देख मन माही ।

अर्थः-कछवी जल में रहती है, उसके बच्चे बाहर (किनारे पर) होते हैं । वह उन्हें न तो पंखों की छाया देती है, न दूध पिलाती है; फिर भी ज़रा मन में सोचो कि वह पूर्ण परमानन्द प्रभु (उन्हें क्योंकर पोषित कर लेता है) ।

पाखण कीट गुपत होइ रहता - ता चो मारग नाही । कहै धंना पूरन ताहू को - मत रे जीअ डरांही । (४८८)

अर्थः-पत्थर में कीड़ा भीतर होता है, उसके लिए बाहर आने-जाने का कोई मार्ग नहीं, तो भी (धन्नाजी कहते हैं कि परमात्मा उसे भोजन देता है), इसलिए ऐ जीव ! तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं । (वह तुम्हारी भी रक्षा करेगा ।)

c. दीनन की प्रतिपाल करै नित - संत उबार गनीमन गारै ।

अर्थः- वे सदैव दीनों का पालन करते हैं, संतों की रक्षा करते हैं और शत्रुओं का नाश करते हैं ।

पछ पसू नग नाग नराधप - सरब समै सभ को प्रतिपारै ।

अर्थः- वह हर समय सभी को धारण करता है , पशु , पक्षी , पर्वत (या वृक्ष), सर्प तथा मनुष्य (मनुष्यों के राजा) ।

पोखत है जल मै थल मै पल मै - कल के नहीं करम बिचारै।

अर्थः- वे जल तथा स्थल में रहने वाले समस्त प्राणियों का क्षण भर में पालन करते हैं तथा उनके कर्मों पर विचार नहीं करते ।

दीन दइआल दइआ निध - दोखन देखत है पर देत न हारै ।

अर्थः- दयालु प्रभु दीनों का स्वामी और दया का भण्डार उनके दोषों को देखता है, किन्तु अपनी कृपा से कभी नहीं चूकता ।

जान को देत अजान को देत - जमीन को देत जमान को दै है ।

अर्थः- वह सभी सजीव और निर्जीव प्राणियों तथा पृथ्वी और आकाश में रहने वाले सभी लोगों को जीविका प्रदान करता है ।

काहे को डोलत है तुमरी सुध - सुंदर स्री पदमापत लैहै ।

अर्थः- हे प्राणी, तू क्यों विचलित हो रहा है ? माया का सुन्दर स्वामी तेरा ध्यान रखेगा ।

रोगन ते अर सोगन ते - जल जोगन ते बहु भांत बचावै ।

अर्थः- वह अनेक प्रहारों से रक्षा करता है, परन्तु कोई भी तुम्हारे शरीर को चोट नहीं पहुँचा सकता ।

सत्र अनेक चलावत घाव तऊ - तन एक न लागन पावै ।

अर्थः- शत्रु अनेक प्रहार करता है, परन्तु कोई भी तुम्हारे शरीर को क्षति नहीं पहुंचा पाता ।

राखत है अपनो कर दै कर - पाप संबूह न भेटन पावै ।

अर्थः- जब प्रभु अपने हाथों से रक्षा करते हैं, तब कोई भी पाप तुम्हारे निकट भी नहीं आता ।

और की बात कहा कह तो सौ - सु पेट ही के पट बीच बचावै । (दसम ग्रंथ - 37)

अर्थः- मैं तुमसे और क्या कहूँ, वह तो गर्भ की झिल्लियों में भी (शिशु की) रक्षा करता है ।

2. काहे रे मन चितवह उदम - जा आहर हरि जीउ परिआ ।

सैल पथर मह जंत उपाए - ता का रिजक आगै कर धरिआ।

अर्थः-हे मन, तू क्यों रोज़ी की चिन्ता में भाग-दौड़ करता है, परमात्मा ने स्वयं तुम्हारे लिए सब प्रबन्ध कर रखे हैं (अर्थात् रोज़ी कमाने के धन्धों को प्रभु-मिलन में रुकावट न समझो, परमात्मा सबको भोजन पहुँचाता है)। पर्वतों-पत्थरों में जो कीट रहते हैं, उन्हें भी वह प्रभु भोजन देता है ।

मेरे माधउ जी - सतसंगत मिले सि तरिआ । गुर परसाद परम पद पाइआ - सूके कासट हरिआ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 495)

अर्थः-(सत्य तो यह है कि) हे प्रभु, जिसे सत्संगति मिली, वह भवसागर से पार होने का अधिकारी बन गया । गुरु की कृपा से जीव

परमपद को पाता है और सूखा काठ भी हरा हो जाता है (अर्थात् निकृष्ट जीव भी परमपद को पाकर श्रेष्ठतर बन जाता है) ।

जनन पिता लोक सुत बनिता - कोइ न किस की धरिआ ।
सिर-सिर रिजक स्मबाहे ठाकुर - काहे मन भउ करिआ ।

अर्थः- माता, पिता, लोक, पुत्र, पत्नी आदि कोई किसी को अवलम्ब नहीं देता । परमात्मा प्रत्येक जीव को भोजन पहुँचाता है, (इसलिए) मन में किसी प्रकार का कोई भय नहीं होना चाहिए ।

ऊडै ऊड आवै सै कोसा - तिस पाछै बचरे छरिआ । उन कवन खलावै कवन चुगावै - मन मह सिमरन करिआ ।

अर्थः- कूँज पक्षी उड़कर कोसों दूर आ जाते हैं, बच्चों को पीछे छोड़ देते हैं । क्या तुमने कभी मन में सोचा है कि उन्हें कौन दाना चुगाता होगा !

सभ निधान दस असट सिधान - ठाकुर कर तल धरिआ ।
जन नानक बल-बल सद बल जाईऐ - तेरा अंत न पारावरिआ।

अर्थः-नौ निधियाँ, अठारह सिद्धियाँ, उसी परमात्मा की कृपा से हस्तामलक हो सकती हैं । नानक कहते हैं कि (परमात्मा पर) बार-बार, सहस्रों बार बलिहार हैं, उसके प्रसार का कोई अन्त नहीं ।

७. पुरखां बिरखां तीरथां - तटां मेघां खेतांह । दीपां लोआं मंडलां - खंडां वरभंडांह । अंडज जेरज उतभुजां - खाणी सेतजांह । सो मित जाणै नानका - सरां मेरां जंताह ।

अर्थः-(गुरु नानक कहते हैं कि) वह परमात्मा ही समुद्रों, पहाड़ों, जीवों, मनुष्यों, वृक्षों, तीर्थों, नदी-तटों, मेघों, खेतों, द्वीपों, लोकों, मण्डलों, खण्डों-ब्रह्माण्डों, अंडजों, जेरजों, स्वेदजों, उद्भिजों, (चारों प्रकार के जीवों) आदि की गणना (सही अंदाज़ा) जानता है । वह हरि जीवों को उत्पन्न कर उन सबकी सँभाल करता है ।

नानक जंत उपाइ कै - समाले सभनाह । जिन करतै करणा कीआ - चिंता भि करणी ताह । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 467)

अर्थः-जो रचयिता बनाता है, वही उसकी (अपनी रचना की) देख-भाल (चिन्ता) भी करता है । जिस रचयिता (कर्ता-पुरुष) ने संसार उपजाया है, वही इसकी चिन्ता करता है । वह परमात्मा कल्याणकारी है, उसे हमारा प्रणाम है, उसका दरबार नित्य है (अभंग है) । गुरु नानक कहते हैं कि जब तक जीव परमात्मा के सच्चे नाम का सहारा नहीं लेता, तब तक तिलक-जनेऊ धारण करने से क्या होता है ?

3. चिंता छड अचिंत रहु - नानक लग पाई ।

अर्थः-हे नानक ! तू प्रभु के चरण स्पर्श कर और चिन्ता-रहित होकर निश्चिन्त रह ।

प्रभ पास जन की अरदास - तू सचा साँई । तू रखवाला सदा सदा - हउ तुध धिआई ।

अर्थः-प्रभु के सेवक की प्रार्थना प्रभु की सेवा में इस प्रकार है कि हे प्रभु ! तुम सत्यस्वरूप हो, तुम सदा ही रक्षक हो, मैं तुम्हें स्मरण करता हूँ ।

जीअ जंत सभ तेरिआ - तू रहिआ समाई । जो दास तेरे की निंदा करे - तिस मार पचाई । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 517)

अर्थः- सब जीव-जन्तु तुम्हारे हैं, तुम सब में मौजूद हो । जो मनुष्य तुम्हारे भक्त की निन्दा करता है, तुम उसे (आत्मिक मृत्यु) देकर दुखी करते हो ।

a. मिहरवान साहिब मिहरवान । साहिब मेरा मिहरवान । जीअ सगल कउ देइ दान ।

अर्थः- हे भाई ! मेरा मालिक दयालु है । सदा दया करनेवाला है । वह सब जीवों को दान देता है ।

तू काहे डोलह प्राणीआ - तुध राखैगा सिरजणहार । जिन पैदाइस तू कीआ - सोई देइ आधार ।

अर्थः- हे प्राणी ! तू क्यों घबराता है ? वह सर्जक प्रभु तेरी रक्षा करेगा । जिसने तुझे उत्पन्न किया है, वही सारी सृष्टि को आश्रय देता है ।

जिन उपाई मेदनी - सोई करदा सार । घट-घट मालक दिला का - सचा परवदगार । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 724)

अर्थः- जिस परमात्मा ने सृष्टि पैदा की है, वही देख-रेख भी करता है । प्रत्येक शरीर में अवस्थित प्रभु दिलों का मालिक है, वह सत्यस्वरूप है और सबकी देख-रेख करनेवाला है ।

६. कोट ब्रहमंड को ठाकुर सुआमी – सरब जीआ का दाता रे । प्रतिपालै नित सार समालै – इक गुन नही मूरख जाता रे ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 612)

अर्थः-हे भाई ! मुझ मूर्ख ने उस परमात्मा का एक भी उपकार नहीं समझा, जो करोड़ों ब्रह्माण्डों का पालक है, जो समस्त जीवों को देन देनेवाला है, जो सबका पालन-पोषण करता है और सदा सुधि लेकर सँभाल करता है ।

८. सार समालै नित प्रतिपालै – प्रेम सहित गल लावै । कह नानक प्रभ तुमरे बिसरत – जगत जीवन कैसे पावै । (617)

अर्थः-हे भाई ! वह परमात्मा सबकी सुधि लेकर सँभाल करता है, सदा पालन करता है, सबको प्रेमपूर्वक गले लगाता है । नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तुम्हे भुलाकर जीव तुम्हें कैसे मिल सकता है ? और तुम ही सब जीवों की ज़िन्दगी का सहारा हो ।

५. आप सवारह मै मिलह – मै मिलिआ सुख होइ । फरीदा जे तू मेरा होइ रहह – सभ जग तेरा होइ । (1382)

अर्थः-परमात्मा की ओर से सम्बोधन करते हैं, ऐ फ़रीद, यदि तुम अपने को सुधार लो तो मुझे मिल सकोगे, मुझे मिलने पर तुम्हे सुख होगा । यदि तुम मेरे ही बन जाओ (अर्थात् परमात्मा में ही विलीन हो जाओ), तो सारा संसार तुम्हारा हो जाएगा ।

(पाठी माँ साहिबा)

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

ऐक शब्द

साध संगत जी, यदि कुछ भी जरा सा भी कम रह गया अथवा बड़ गया है तो हम दोनों हाथ जोड़कर नतमतसक आपसे क्षमा प्रार्थी हैं । अतः कृपया क्षमा प्रदान करें और बख्शने की भी कृपालता करें - धन्यवाद ।

सृष्टि में सदा ही कोई एक विरला - दुर्लभ - मर्यादित - महाजीव विशेष विद्यमान होता ही है, अतः हम उस महा प्राणी को दोनों हाथ जोड़ नतमतसक सदा ही नमस्कार करते हैं ।

एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
मेरे साहिब की
नानक चिंता मत करहु - चिंता तिस ही हेइ । जल मह जंत उपाइअन
- तिना भि रोजी देइ । ओथै हट न चलई - ना को किरस करेइ ।
सउदा मूल न होवई - ना को लए न देइ । जीआ का आहार जीअ -
खाणा एहु करेइ । विच उपाए साइरा - तिना भि सार करेइ ।
www.9009.co.in